ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 13 अंक 29 | कुल पृष्ठ-8 | 8 से 14 मार्च, 2018 | दयानन्दाब्द 194 | सृष्टि सम्वत् 1960853118 सम्वत् 2074 | चै.कृ.-06

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों एवं प्रमुख कार्यकर्ताओं का महत्त्वपूर्ण सम्मेलन आर्य समाज हरिद्वार में भव्यता के साथ सम्पन्न

विभिन्न आन्दोलनों के माध्यम से आर्य समाज को लोकशक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाये

– स्वामी आर्यवेश

उत्तर प्रदेश में शराबबन्दी आन्दोलन चलायेगा आर्य समाज

– डॉ. धीरज सिंह

शिविरों के माध्यम से युवा शक्ति को आर्य समाज में दीक्षित किया जायेगा

– स्वामी धर्मेश्वरानन्द

सार्वदेशिक सभा की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महासम्मेलन हरिद्वार में आयोजित किया जाये

– स्वामी यतीश्वरानन्द

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में गत् 4 व 5 मार्च, 2018 को आर्य समाज श्रवणनाथ नगर, हरिद्वार में जिला सभाओं के पदाधिकारियों एवं प्रमुख आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं का महत्त्वपूर्ण सम्मेलन कई महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान डॉ. धीरज सिंह ने की तथा संचालन सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने बड़ी कुशलता के साथ किया।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सम्बोधित करते हुए आर्यों का आह्वान किया कि आर्य समाज राजशक्ति पर अंकुश के लिए लोकशक्ति मजबूत करने के लिए सक्रिय भूमिका निभाये। उन्होंने कहा कि शराबबन्दी आन्दोलन एक ऐसा ज्वलन्त मुद्दा है जिस पर देश की 80 प्रतिशत जनता को संगठित किया जा सकता है। इस प्रकार संगठित हुई लोकशक्ति राजशक्ति पर अंकुश लगाने का काम कर सकती है।

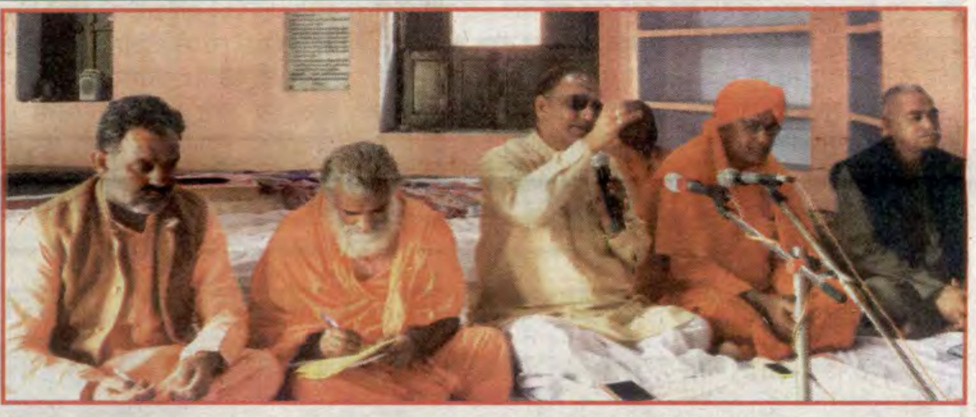

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि देश में शराब का व्यापार सरकारें कर रही हैं। अतः यह आवश्यक है कि सरकार पर दबाव बनाने के लिए लोकशक्ति मजबूत की जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के इतिहास पर विहंगम प्रकाश डालते हुए कार्यकर्ताओं को उत्साह एवं जोश से भर दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में देश की विकट परिस्थितियों को आर्य समाज ही बदल सकता है। आर्य समाज के भवनों से बाहर निकलकर आम जनता के साथ जुड़ें तथा आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक मुद्दों पर जनता को संगठित करें। धार्मिक पाखण्ड पर प्रहार करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि दो वर्ष पूर्व हरिद्वार से होशंगाबाद की जन–चेतना यात्रा के दौरान उन्होंने नारा दिया था कि 'जो पाखण्ड फैलायेगा वही जेल में जायेगा' आज उनका यह नारा पूरी तरह से फलीभूत हो रहा है। क्योंकि इस दौरान कई पाखण्डी बाबा एवं तथाकथित संत जेल की सीखचों के पीछे बन्द हो चुके हैं।

हरिद्वार ग्रामीण के यशस्वी विधायक एवं युवा संन्यासी स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने अपने सम्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी से अपील की कि वे हरिद्वार की ऐतिहासिक धरती पर आर्य समाज का एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करें, उस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए मेरा तन–मन–धन से सहयोग रहेगा। स्वामी जी ने एक बार फिर आर्य समाज को सक्रिय करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में जिन गम्भीर समस्याओं से देश जूझ रहा है उनका समाधान आर्य समाज ही कर सकता है।

शेष पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान में आर्य समाज सांताक्रुज मुम्बई में

वेदों में शिक्षा विज्ञान विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

दिनांक : 23 से 25 मार्च, 2018

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक 23 से 25 मार्च, 2018 को स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली) की अध्यक्षता में आर्य समाज सांताक्रुज, विट्ठलभाई पटेल रोड, सान्ताक्रुज (पश्चिम), मुम्बई में 'वेदों में शिक्षा विज्ञान' के विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया है जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी (दिल्ली) एवं स्वामी धर्मानन्द जी (गुरुकुल आमसेना) विशेष अतिथि रहेंगे।

इस संगोष्ठी में गुरुकुलों के आचार्य एवं आचार्या तथा गुरुकुलों के प्रतिष्ठित स्नातक, गुरुकुलों की वर्तमान समय में उपयोगिता तथा एकरूपता, आर्ष पाठ विधि की महत्ता, इसमें उपस्थित बाधाएँ, गुरुकुलों के स्थान पर अन्य शिक्षा प्रणाली का प्रचलन, आर्य समाज के लिए हितकारी या अहितकारी, अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूत्र आदि विषयों पर गहन चिन्तन किया जायेगा। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

– आचार्य सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई,
डी–309, मिल्टन अपार्टमेंट, जुहू कोलीवाड़ा, मुम्बई, मो.:– 9869668130

प्राकृतिक चिकित्सा ने मुझे नया जीवन दिया

– मधुर प्रकाश शास्त्री

मार्च 1985 ई. की घटना है दिन ठीक से याद नहीं है। हम सपरिवार दक्षिण भारत घूमने के लिए ट्रेन से यात्रा कर रहे थे। ट्रेन में रात को बैठे। सुबह से ही मुझे डायरिया हो गया। शाम होते–होते मेरी हालत बहुत खराब हो गई। ट्रेन से उतरकर सबसे पहले मुझे डॉक्टर को दिखाने ले जाया गया। मुझे वहाँ भर्ती कर लिया गया। तीन बोतल ग्लूकोज़ चढ़ी और 5 इंजेक्शन लगे। तीन घण्टे में मैं अपने आपको इतना स्वस्थ महसूस करने लगा कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं। ये है एलोपैथी का जादुई असर। मगर अस्थाई लाभ, दवा से मेरा रोग कुछ समय के लिए दब गया, खैर किसी तरह यात्रा सम्पन्न हुई। 15 दिन हम घूमकर घर लौटै। घर आने पर हर एक–दो महीने में डायरिया, दस्त, पेचिश होती रहती, दवा लेने पर ठीक हो जाती। फिर महीने–डेढ़ महीने में अक्सर खून के दस्त हो जाते। कई टेस्ट, एक्सरे हुए, सही निदान नहीं हो पाया। आखिर में दूरबीन की जाँच सिग्मोडॉस्कॉपी हुई। वायोप्सी करवाई। बड़ी आंत के डिसेडिंग कॉलन में घाव हो गये। इसके कारण खून के दस्त होते थे। रोग का नाम अल्सरेटिव कॉलाइटिस (बृहदान्त्र व्रण) बताया। इस रोग का कोई स्थाई इलाज नहीं बताया। उस समय मेरी उम्र मात्र 25 वर्ष थी, समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें।

दूसरे इलाज भी करवाये, जयपुर के जाने–माने डॉक्टर ने 8 साल तक इलाज किया। दो–तीन महीने बिल्कुल ठीक रहता फिर एक–दो महीने में खूनी दस्त प्रतिदिन होते। डॉक्टर हर साल 6 महीने में दूरबीन की जाँच कॉलोनोस्कॉपी करते। साल में 8 महीने कुछ ठीक, तो चार महीने बीच–बीच में खूनी दस्तों का दौरा चलता रहता। हर तरह का इलाज कराते हुए कष्टप्रद जीवन यात्रा का सफर तय हो रहा था। मेरे साथ परिवार वाले भी परेशान थे। अप्रैल, 1996 को डॉक्टरों ने जाँच की। रोग की बढ़ती हुई असामान्य स्थिति देखकर जवाब दे दिया। आखिर में स्थिति यहाँ तक आ गई कि मंहगी से मंहगी एलोपैथी दवाईयों तथा बड़े–बड़े डॉक्टरों ने हार मानते हुए निराशा व्यक्त कर दी। सब तरफ से दरवाजे बन्द हो चुके थे। तन जर्जर, मन हताश, चित्त निराश, भयंकर रोग से ग्रस्त तिल–तिल कर मरने को अभिशप्त था। परिवार पर मानो निराशा का पहाड़ टूट पड़ा हो। सभी के दिलों से खुशी, उमंग, सुख मानो गायब हो गया हो। परन्तु ईश्वर पर बचपन से ही विश्वास था। मन में ऐसे भाव बार–बार आते कि किसी जन्म में किये हुए पापों की सज़ा बीमारी के रूप में भुगत कर पापमुक्त हो रहा हो। भगवान भी पापमुक्त होने पर शुद्ध होने पर ही अपनाता है। इन विचारों से मन में कुछ शांति, रोग को सहन करने की शक्ति मिलती और भजन की ये पंक्तियाँ बार–बार अन्तर्मन से निकलती।

दुःख चाहे कितने ही दे, दुःख सहने की शक्ति दे।
संकट में भी ध्यान न छूटे, भक्ति की तू मुझे दौलत दे।।

मैंने महसूस किया कि सच्चे दिल से निकली पुकार भगवान के सिंहासन को भी हिला देती है। बढ़ी हुई बिमारी की अवस्था भी मुझे सहज लगने लगी। इसी बीच भगवत इच्छा से हमें निराश रोगियों के तीर्थ स्थल, नवनीत प्राकृतिक चिकित्सा धाम, बस्सी के बारे में उत्साहजनक परिणाम सुनने को मिले। घर परिवार वालों को तो जब तक सांस रहती है तब तक अपने स्वजन के प्रति स्वस्थ रहने की आशा रहती ही है। ऐसी ही आशा संजोकर मुझे निराश रोगियों के तीर्थ स्थल बस्सी लाया गया।

डॉ. ने मुझे धैर्य पूर्वक देखा, रोग अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था। डॉक्टर साहब ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि धैर्य पूर्वक लम्बे समय तक इलाज की आवश्यकता है। मुख्य बात यह है कि आप निराश न होकर स्वास्थ्य के प्रति आशावादी विचार हमेशा बनाये रखें। प्राकृतिक चिकित्सा में उपचार के दौरान दवाओं द्वारा दबाई हुई बिमारी बाहर निकलती है। अतः पूर्ण धैर्य रखना होगा। हमें सब कुछ सहर्ष स्वीकार था। क्योंकि अन्य द्वार मेरे स्वास्थ्य के लिए बन्द से हो चुके थे। सभी दवाईयाँ बन्द कर दी गई और उपचार प्रारम्भ हुआ। मैं तो अपने जीवन से निराश सा हो चुका था, पर डॉक्टर साहब ने धैर्य बंधाते हुए कहा कि मेरा पूरा विश्वास है कि आप बिल्कुल ठीक हो जायेंगे। धैर्य एवं शीघ्र स्वस्थ होने के आशावादी ही विचार बनायें। निराशा को मन से बिल्कुल निकाल दें। डूबते को जैसे तिनके का सहारा मिल जाये वैसे ही उनके आश्वासन में मेरे मृतवत् शरीर में संजीवनी का कार्य किया। यह जानकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसी दिन से मुझे धीरे–धीरे स्वास्थ्य लाभ मिलना शुरू हो गया। लगभग पूरे महीने तक चिकित्सा का क्रम चलता रहा। अब खूनी दस्त प्रायः बन्द हो गये थे। कुछ ही दिनों में मुझे अच्छा लाभ हो गया। इधर कई वर्ष मुझे प्राकृतिक चिकित्सा लिये हो गये हैं। इन वर्षों में कोई दवा की आवश्यकता नहीं हुई।

प्राकृतिक चिकित्सा के अनुभव से मुझे यही कहना है कि यदि आपको स्वस्थ एवं रोगमुक्त रहना है तो गलत आहार–विहार एवं गलत चिन्तन को छोड़ दें। सम्यक आहार–विहार एवं सम्यक चिन्तन को जीवन से जोड़ें। प्राकृतिक चिकित्सा सही जीवन जीने की कला सिखाती है। ये केवल तन की ही चिकित्सा नहीं है अपितु मन को भी स्वस्थ रखती है। विकार रहित बनाती है। मन को अनुशासित एवं संयमित रखना सिखाती है। जिन पंचतत्त्वों से शरीर बना है। उन्हीं पंचतत्त्वों (मिट्टी, पानी, धूप, हवा और आकाश) के सम्यक सेवन के द्वारा ही शरीर को निरोग रखना – यही एकरूपता प्राकृतिक चिकित्सा की मुख्य विशेषता है।

– मधुर प्रकाशन, 2804 आर्य समाज गली, बाजार सीताराम, दिल्ली–6

सार्वदेशिक सभा की ओर से नववर्ष की मंगल कामना

नव वर्ष यानि सम्वत् 2075 का आगमन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 18 मार्च, 2018 को होगा। इसी दिन ऋषिवर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संसार को वेदों का ज्ञान देने और मानव मात्र की सेवा का संकल्प लेकर सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी। सार्वदेशिक सभा परिवार नववर्ष और आर्य समाज स्थापना दिवस के पावन पर्व पर समस्त आर्यजनों एवं पाठकों के प्रति शुभकामना प्रकट करते हुए सुख, समृद्धि तथा ऐश्वर्य की कामना करता है।

प्रिय पाठकों! इस शुभ दिवस पर महर्षि दयानन्द के ऋणों से अनृण होने का संकल्प लेते हुए आर्य समाज के पुनरोदय में सहभागी बनने का व्रत भी लें।

स्वामी आर्यवेश	पं. माया प्रकाश त्यागी	प्रो. विट्ठलराव आर्य
सभा प्रधान	कोषाध्यक्ष	सभा मंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

आर्य समाज स्थापना दिवस पर विशेष

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

– देवेन्द्र कुमार शशिकर

ऋग्वेद का एक मन्त्र है— इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो ऽ रावणः। अर्थात् हे (अप्तुरः) अच्छे काम करने में निपुण लोगो ! (इन्द्रं) परम ऐश्वर्यवालों को (वर्धन्तः) बढ़ाते हुए (अरावणः) पापियों को (अपघ्नन्तः) नाश करते हुए (विश्वं) सम्पूर्ण संसार को (आर्य) आर्य अर्थात् श्रेष्ठ (कृण्वन्तो) बनाओ।

जिन्होंने अच्छे कार्यों से अपने जीवन को अच्छा बना लिया है, ऐसे निपुण लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि पापियों का नाश करते हुए तथा परम ऐश्वर्यशक्तियों को बढ़ाते हुए सारे संसार को आर्य बनाओ।

इस मंत्र में मुख्यतः तीन बातें हैं। अच्छे कार्यों द्वारा अपने जीवन को सुन्दर बनाना, पापियों का नाश करना तथा परम ऐश्वर्यशक्तियों को बढ़ाना। इस प्रकार सारे विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाकर उच्चता के शिखर पर पहुँचाना।

प्रश्न उपस्थित होता है कि आर्य कौन है? आर्य शब्द जातिसूचक नहीं है। आर्य वह है जो मानवता के उच्च शिखर पर पहुँच चुका हो अथवा उस दिशा में प्रत्यनशील हो। जो सुसंस्कृत, शिष्ट, सदाचारी, ईमानदार, सत्यवादी, दयालु, परिश्रमी, विद्वान् तथा श्रेष्ठ पुरुषों के प्रति आदर बुद्धिवाला इत्यादि सद्गुणों से युक्त हो। इस प्रकार आर्य शब्द वैयक्तिक तथा सामाजिक सद्गुणों से युक्त एक विशेष प्रकार का नैतिक और समाजिक आदर्श का बोध कराता है। आर्य वह है जिसने अच्छे काम द्वारा अपने जीवन को सुन्दर बना लिया है। आर्य को सारे मानवीय गुणों को अपने जीवन में उतारना होता है। अतः सद्गुणों से युक्त जो पुरुष है, वही आर्य हैं इसलिए आर्य शब्द का सबसे सुन्दर अर्थ 'श्रेष्ठ' है। आर्यसमाजी घराने में जन्म लेने मात्र से या अपने नाम के आगे 'आर्य' शब्द लगाने से वस्तुतः कोई आर्य (श्रेष्ठ) नहीं बन जाता। आर्य बनने के लिए सारे मानवीय उत्तम गुणों को धारण करना होता है।

अब प्रश्न होता है— आर्य बनने के साधन क्या है? मंत्र में कहा है— अपघ्नन्तोऽरावणः अर्थात् इन्द्र को बढ़ाते हुए। इन्द्र शब्द की उत्पत्ति इदि परमैश्वर्य धातु से हुई है। इन्द्र को बढ़ाने का अर्थ है— परम ऐश्वर्य को बढ़ाना। ऐश्वर्य या परम ऐश्वर्य में कौन—कौन सी चीजें आती है? जब हम ऐश्वर्यों पर विचार करते हैं तो आर्य को सांसारिक धन – दौलत आदि की वृद्धि करनी चाहिए। धन के बिना व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र या विश्व का, किसी का भी काम नहीं चल सकता। धन के बिना न तो कोई सरकार चल सकती है और न कोई संस्था ही जीवित रह सकती है। गृहस्थियों का जीवन तो उसके बिना मृत्यु के समान है। साधु—संन्यासी, वानप्रस्थी, महात्मा तथा ब्रह्मचारी भी उसके बिना मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं। इसलिए वेद में भी कहीं भी सांसारिक धन दौलत की निंदा नहीं की गई है। मानव जीवन में धन का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए वेद कहता है— अर्थ हयस्यतरणि। यह संसार एक विशाल समुद्र है। जिस प्रकार समुद्र को पार करने के लिए नाव की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार संसार रूपी सागर को पार करने के लिए धन की आवश्यकता है। प्रार्थना के मंत्रों में हम प्रतिदिन कहते हैं— वयं स्याम पतयो रयिणाम्। हे प्रभो ! हम धन—ऐश्वर्यों के स्वामी हों। परन्तु यह धन आर्यत्व की वृद्धि करने वाला कब होगा? प्रार्थना के मंत्रों में कहा गया है— अग्ने नय सुपथा राये। हे अग्नि ! तू ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए हमें उत्तम मार्ग से ले चल। हम ईमानदारी और सच्चाई की कमाई का धन प्राप्त करें। क्योंकि यही धन हमारे शरीर, आत्मा, राष्ट्र और समाज का पोषण करने वाला है। वेद में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है— अग्निना रयिम श्नवत् पोषमेव दिवे दिवे। यशसं वीरवत्तमम्। हम अपने पुरुषार्थ के द्वारा ऐसे धन का अर्जन करें जो प्रतिदिन हमारे पोषण का कारण हो, हमें यश प्रदान करने वाला हो और पराक्रम प्रदान करने वाला हो। धन सचाई और ईमानदारी से कमाना चाहिए। परन्तु यह सांसारिक धन—दौलत परम ऐश्वर्य—अंतिम ऐश्वर्य नहीं है। वास्तव में मात्र इस ऐश्वर्य से आनन्द या शान्ति नहीं मिल सकती है। यह धन तो सांसारिक सुख का कारण हो सकता हैं। कहा गया है— सुखस्य मूलं धर्मः। धर्मस्य मूलमर्थः। अर्थात् सुख का मूल धर्म है और धर्म का मूल अर्थ है। धार्मिक कार्य अर्थ द्वारा किये जाते है। इन धार्मिक कार्यों को ध्यान में रखते हुए वेद कहता है— शत हस्त समाहर सहस्रहस्त संकिरः। अर्थात्, आर्य बनने के लिए, इन्द्र बनने के लिए धन आदि ऐश्वर्यो की उत्पत्ति करके उसका लाभ समाज को देने वाला'' तेन त्येक्तेन भुञ्जीथाः'' वैराग्य भाव से भोग करो का मंत्र ध्यान में रखने वाला आर्य है। वह परम ऐश्वर्यशालियों को बढ़ानेवाला है।

आर्यत्व के लिए दूसरा ऐश्वर्य शारीरिक बल है। शारीरिक बल भी परम ऐश्वर्य है। उपनिषदों में शारीरिक बल की महिमा गाई गई है। छान्दोग्योपनिषद् में एक जगह कहा

आर्य शब्द जातिसूचक नहीं है। आर्य वह है जो मानवता के उच्च शिखर पर पहुँच चुका हो अथवा उस दिशा में प्रत्यनशील हो। जो सुसंस्कृत, शिष्ट, सदाचारी, ईमानदार, सत्यवादी, दयालु, परिश्रमी, विद्वान् तथा श्रेष्ठ पुरुषों के प्रति आदर बुद्धिवाला इत्यादि सद्गुणों से युक्त हो। इस प्रकार आर्य शब्द वैयक्तिक तथा सामाजिक सद्गुणों से युक्त एक विशेष प्रकार का नैतिक और समाजिक आदर्श का बोध कराता है। आर्य वह है जिसने अच्छे काम द्वारा अपने जीवन को सुन्दर बना लिया है। आर्य को सारे मानवीय गुणों को अपने जीवन में उतारना होता है। अतः सद्गुणों से युक्त जो पुरुष है, वही आर्य है इसलिए आर्य शब्द का सबसे सुन्दर अर्थ 'श्रेष्ठ' है।

गया है कि एक बलवान मनुष्य आता है वह सैंकड़ों ज्ञानवालों को कंपा देता है—झुका देता है। बल न हुआ तो हम कुछ भी नहीं कर सकेंगे। नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः— यह परमात्मा बलहीन मनुष्यों को अप्राप्य है। शरीर में बल नहीं है, तो कुछ भी नहीं है। अपने शरीर को वज्र के समान कठोर बनाओ। अश्मानं तन्वं वृद्धि—अपने शरीर को पत्थर बनाओ। शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए नियमित और संतुलित आहार तथा आसन— प्राणायाम, तैरना, दौड़ना, खेलना, कूदना, टहलना, कसरत आदि नियमित व्यायाम करना चाहिये। यह शरीर जितना निरोग, सुन्दर और स्वच्छ होगा, पवित्र होगा उतना ही आत्मा का प्रकाश फैलेगा। इसलिए आर्यत्व के लिए शारीरिक बल प्राप्त करना आवश्यक है। परन्तु इस बल की उपयोगिता क्या है? शारीरिक बल की पवित्रता और उपयोगिता है—दुर्बलों तथा असहायों पर क्रोद्ध मत करो, उन्हें सहारा दो, उनकी रक्षा करो। आर्यत्व के लिए तीसरा ऐश्वर्य आत्मबल है। चाणक्य ने लिखा है—जितात्मा सर्वाथः संयुज्यते। आत्मवशी को कोई वस्तु अप्राप्य नहीं होती। आत्मबल परम बल है, बलों का बल है, वास्तविक बल है। इन्द्रियों में जो शक्ति है, वह आत्मा की ही है। यदि मनुष्य में आत्मबल न हो तो शारीरिक बल व्यर्थ सिद्ध हो जाता है। कृशकाय व्यक्ति भी यदि आत्मबल से युक्त हो तो वह पराक्रमी और साहसी सिद्ध होते हैं।

हमें आर्य बनने के लिए आध्यात्मिक बल से युक्त होना होगा। आत्मिक बल की प्राप्ति के लिए हमें अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करनी होगी। रामायण में 'दशरथ' और 'दशमुख' दोनों पात्र दो व्यक्तियों के दो प्रतीक है। एक आर्यत्व का और दूसरा अनार्यत्व का। आर्य या अनार्य कोई जातियाँ नहीं है। दशरथ ने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर रखी थी। और दशमुख (रावण) अपनी इन्द्रियों के वश में था। जो अपनी इन्द्रियों को वश में रखता है, वह दशरथ है। इसके विपरीत जो अपनी इन्द्रियों का दास है, वह रावण है। जो व्यक्ति इन्द्रियों का स्वामी बन जाता है, वह आर्य हो जाता है, इन्द्र हो जाता है। प्रभात बेला में इन्द्र का आवाहन करो। उत्तम ज्ञान देने वाले यज्ञ में इन्द्र का स्मरण करो और अध्यात्मिक आनन्द की प्राप्ति के लिए इन्द्र का स्मरण करो तथा उसके गुणों को धारण करों। इन्द्र शक्ति अथवा आत्मबल के बिना अन्य सब बल निरर्थक है। इन्द्र शक्ति कार्यो से बढ़ती है। इन्द्रं बर्धन्ति कर्मभिः—इन्द्र शक्ति अर्थात् आत्मबल को कर्म से बढ़ाओ।

आत्मबल को समझने के लिए शरीर और आत्मा की अलग—अलग सत्ता को समझना चाहिए। जन्म शरीर का होता है आत्मा का नहीं। शरीर का बचपन, जवानी और बुढ़ापा आता है, पर इन भिन्न—भिन्न अवस्थाओं में भी जो एक रूप बना रहता है, वही तो आत्मा है। मृत्यु आत्मा की नहीं होती। आत्मा तो अजर—अजर है।

आत्मा को अमर देखने वालों में अनेक महान् व्यक्ति हुए है। सरदार भगत सिंह को जब सूली पर चढ़ाने के लिए ले जाया जा रहा था, तो उसका चेहरा उज्ज्वल हो उठा, उसका बजन बढ़ गया। उसके भीतर कोई हस्ती थी जो कहती थी कि यह शरीर सूली पर चढ़ेगा—आत्मा अमर रहेगा। राम प्रसाद बिस्मिल को जब फॉसी दी गई, उस समय उसके ह्रदय में प्रसन्नता, चेहरे पर तेज और मुख में 'ओं विश्वानि देव'' मंत्रों की प्रार्थना थी। रोशन सिंह को जब फाँसी दी गई, उसके एक दिन पहले जेल में कसरत करते देखकर अंग्रेज सुपरिटेंडेंट दंग रह गया और जाकर पूछा कि तुम कसरत क्यों कर रहे हो, कल तो तुम्हें फाँसी होगी? रोशन सिंह ने स्वाभाविक रूप से मुस्कुराते हुए कहा—आत्मा को आग नहीं जला सकती, पानी नहीं डूबा सकता, वायु नहीं सुखा सकती, शस्त्र नहीं काट सकते। मैं शक्ति के संस्कारों के साथ पुनर्जन्म लूंगा। यह है आत्मबल। संयोग से ये तीनों ही बलिदानी वीर आर्य समाजी थे। महर्षि दयानन्द को विष दिया गया। विष से रोम—रोम में आग लगी थी, परन्तु चेहरे पर वह दिव्य प्रकाश था जिसे देखकर गुरुदत्त विद्यार्थी जैसा नास्तिक व्यक्ति भी आस्तिक बन गया। इस प्रकार शरीर खोल है, आत्मा इस खोल के अन्दर की गिरी है। टूटता खोल है, मरता शरीर है। आत्मा नहीं मरती। शरीर का रूप बदलना मृत्यु है, आत्मा अमर है। इस तत्व को जो समझ लेता है, वह इन्द्र हो जाता है, आर्य हो जाता है। आर्य का अर्थ है—श्रेष्ठ, आर्य का अर्थ है—विशाल दृष्टि से देखने वाला, अनासक्त, विमोह। जब सारा संसार सांसारिक ऐश्वर्यों से पूर्ण होगा खाना, कपड़ा और मकान की समस्या नहीं रहेगी, शारीरिक, मानसिक, विद्या और ज्ञान की दृष्टि से हम सम्पन्न और सशक्त हो जायेंगे और आत्मिक बल से परिपूर्ण होकर सत्य और असत्य के निर्णय में समर्थ होंगे, तभी हम सच्चे अर्थो में आर्य बनेंगे और स्वयं आर्य बनकर संसार को आर्य बनायेंगे। यही है कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का सही अर्थ।

आर्य समाज शिवपुरी, खतौली, जिला-मुजफ्फरनगर (उ. प्र.) में त्रिदिवसीय होलिकोत्सव (नवसस्येष्टि) यज्ञ धूमधाम के साथ आयोजित किया गया

आर्य समाज के नव-निर्मित भवन का लोकार्पण भी तपोनिष्ठ, योगनिष्ठ संन्यासी स्वामी कर्मवीर जी महाराज, दानवीर ठा. विक्रम सिंह जी व सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के कर-कमलो से हुआ

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार के प्रभावशाली प्रवचनों एवं युवा आर्य भजनोपदेशक श्री मोहित शास्त्री के भजनों की मची रही धूम

आर्य समाज शिवपुरी, जानसठ रोड, खतौली, जिला-मुजफ्फरनगर (उ. प्र.) में गत 28 फरवरी से 2 मार्च, 2018 तक भव्य होलिकोत्सव (नवसस्येष्टि यज्ञ) एवं भवन लोकार्पण समारोह का आयोजन उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। 28 फरवरी को कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्य समाज के नवनिर्मित दो मंजिले भवन के लोकार्पण के साथ हुआ। लोकार्पण तपोनिष्ठ एवं योग मर्मज्ञ संन्यासी स्वामी कर्मवीर जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं प्रसिद्ध दानवीर, समाजसेवी ठा. विक्रम सिंह जी के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। लोकार्पण के पश्चात् भवन के ऊपर ओ३म् ध्वज उत्तोलन किया गया जिसमें तीनों विशिष्ट व्यक्तित्व सम्मिलित हुए।

लोकार्पण समारोह को सम्बोधित करते हुए ठा. विक्रम सिंह जी ने आर्य समाज को और अधिक शक्ति सम्पन्न बनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि देश में अराष्ट्रीय तत्त्व सिर उठा रहे हैं और देश के वातावरण को बिगाड़ने के लिए कृत-संकल्प हैं। अतः यह आवश्यक है कि आर्य समाज देश को नेतृत्व एवं दिशा प्रदान करे। उन्होंने धार्मिक पाखण्ड, छुआछूत, जातिवाद एवं महिला उत्पीड़न को भी समाज के लिए एक चुनौती बताया। ठा. विक्रम सिंह जी ने आर्य समाज के कार्य के लिए तन-मन-धन से सहयोग देने की महत्त्वाकांक्षी घोषणा भी की।

तपोनिष्ठ स्वामी कर्मवीर जी महाराज ने आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये और कहा कि जब तक आर्य समाज की प्राथमिक इकाई से शीर्षस्थ संगठन तक विवाद एवं झगड़े रहेंगे तब तक आर्य समाज देश की ज्वलन्त समस्याओं से लड़ने में सक्षम नहीं होगा। अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम पहले अपने संगठन को ठीक करें और उसके पश्चात् देश की जनता को साथ लेकर विभिन्न सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध अभियान शुरू करें।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने सम्बोधन में आर्य समाज को आम जनता से जोड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की स्थापना संसार का उपकार करने के लिए की गई थी। अतः यह आवश्यक है कि लोगों की समस्याओं को अपने कार्यक्रम में प्राथमिकता देकर आर्य समाज राष्ट्रव्यापी अभियान प्रारम्भ करे। स्वामी जी ने बताया कि स्वतंत्रता आन्दोलन में जिस प्रकार आर्य समाज के महान नेताओं ने बलिदान के रास्ते पर चलकर देश की जनता का विश्वास जीता था और आन्दोलन का नेतृत्व किया था उसी प्रकार आवश्यकता है कि वर्तमान में आर्य समाज नशाखोरी, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, धार्मिक पाखण्ड, महिला उत्पीड़न तथा शोषण के विरुद्ध जोरदार अभियान चलाये। उन्होंने कहा कि आर्य समाज को एक उपयोगी एवं लोक कल्याणकारी केन्द्र का रूप प्रदान किया जाना चाहिए। जिस मोहल्ले या कॉलोनी

अगले पृष्ठ पर जारी

पृष्ठ–1 का शेष

सम्मेलन में लिये गये महत्त्वपूर्ण निर्णय

- अप्रैल माह में पूरे उत्तर प्रदेश में तहसील तथा जिला स्तर पर किया जायेगा शराब के विरुद्ध धरना तथा प्रदर्शन।
- शराबबन्दी के लिए लखनऊ में होगा विशाल धरना प्रदर्शन।
- सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध तथा आमजनों को आर्य समाज से जोड़ने के लिए पूरे उत्तर प्रदेश में गाँव, तहसील तथा जिला स्तर पर आम लोगों को जागरूक करने के लिए चलाया जायेगा जन सम्पर्क अभियान।

आर्य समाज हरिद्वार के प्रबन्धक प्रखर वक्ता एवं युवा विद्वान् डॉ. वीरेन्द्र पंवार ने सभी आगन्तुक आर्य नेताओं तथा कार्यकर्ताओं का जोरदार स्वागत किया और आर्य समाज को जुझारू संगठन बनाने का सुझाव दिया। इस सम्मेलन में उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के विभिन्न जिलों से कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी भारी संख्या में सम्मिलित थे तथा संगठन को मजबूती प्रदान करने, वेद प्रचार की योजना बनाने तथा शराबबन्दी आन्दोलन चलाने के सम्बन्ध में अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये।

कार्यक्रम में सर्वश्री ज्ञानेन्द्र गांधी–मुरादाबाद, मा. सुमन्त सिंह आर्य–हरिद्वार, प्रियव्रत शास्त्री–सहारनपुर, वीरेश भाटी एवं विजेन्द्र सिंह–गौतमबुद्धनगर, यशपाल आर्य–सुल्तानपुर, अजब सिंह आर्य–मुरादाबाद, जय प्रकाश भारती–गाजीपुर, जिला सभा के प्रधान हाकम सिंह आर्य–रुड़की, धर्मेन्द्र आर्य छपरौली, बागपत, ऋषिराज आर्य बिजनौर आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत कये। यह सम्मेलन अत्यन्त उत्साह एवं महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ–4 का शेष

आर्य समाज शिवपुरी, खतौली, जिला–मुजफ्फरनगर (उ. प्र.) में त्रिदिवसीय होलिकोत्सव (नवसस्येष्टि) यज्ञ धूमधाम के साथ आयोजित किया गया

या गाँव में वहाँ रहने वाले सभी लोगों के साथ आर्य समाज का सीधा सम्बन्ध स्थापित किया जाये एवं उनके दुःख–दर्द का सहयोगी तथा साथी बनाया जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज खतौली के पदाधिकारियों को नवनिर्मित शानदार भवन के लिए हार्दिक बधाई देते हुए इसे क्षेत्र की समस्त आर्य सामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बनाने का सुझाव दिया।

आर्य समाज की ओर से तीनों विशिष्ट महान विभूतियों को स्मृति चिन्ह भेंटकर तथा माल्यार्पण द्वारा सम्मानित किया गया। इस त्रिदिवसीय होलिकोत्सव एवं लोकार्पण कार्यक्रम के संयोजन का गुरुतर भार कुशल संयोजक तथा प्रतिष्ठित व्यक्तित्व मा. सत्येन्द्र पाल सिंह आर्य ने किया। आर्य जगत् के प्रसिद्ध युवा विद्वान और आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के महामंत्री डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार के प्रभावशाली प्रवचनों एवं युवा आर्य भजनोपदेशक श्री मोहित शास्त्री के मधुर भजनों की कार्यक्रम में धूम मची रही। तीनों दिन श्रोताओं की आकर्षक उपस्थिति एवं सुनने की जिज्ञासा से डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार के प्रवचन और भी अधिक प्रभावशाली रहे।

पुलिस उपाधीक्षक खतौली डॉ. राजीव कुमार व पुलिस इंस्पेक्टर अम्बिका प्रसाद भारद्वाज भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए और उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज की विचारधारा को देश के लिए अत्यन्त उपयोगी तथा प्रासंगिक बताया। आर्य समाज की ओर से इन दोनों अधिकारियों को सत्यार्थ प्रकाश भेंटकर सम्मानित किया गया।

उत्सव में प्रभव आर्य का उपनयन संस्कार भी किया गया। कार्यक्रम में आर्य समाज के धर्माचार्य पं. रामदेव शास्त्री एवं सुकीर्ति आर्या ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। इस समारोह में सर्वश्री सत्येन्द्र पाल आर्य, राजपाल आर्य, मनसा राम आर्य, मा. जगदीश सिंह प्रधान, पवन कौशिक मंत्री, सुशील आर्य उपप्रधान, रण सिंह आर्य उपप्रधान, अजेश गुप्ता कोषाध्यक्ष, मा. जयपाल सिंह मावी, अरुण धारीवाल एवं दीपक आर्य आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इसमें प्रतिदिन प्रातः 7 से 10 बजे तक पारिवारिक यज्ञ एवं प्रवचनों का कार्यक्रम चलाया गया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा को नव-संवत्सर (नववर्ष) मनाकर गर्व करें

– गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन'

विश्व में मानव जीवन के इतिहास की काल गणना में प्राचीन परम्परा ही वैज्ञानिक नजर आती है। सम्वत् चाहे किसी नाम से तथा कहीं भी आरम्भ किये गये हों किन्तु इन सबका आरम्भ करने की परम्परा एक ही दिन चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से की जाती रही है। पूरे देश में विभिन्न पर्वों के रूप में इस दिवस को मनाया जाता है। इसमें चेती चाँद का त्यौहार, गुड़ी पड़वा का त्यौहार, उगादी त्यौहार भी इसी दिन मनाया जाता है। नये कार्यों का आरम्भ भी नववर्ष की प्रतिपदा से ही करने की परम्परा आज भी बनी हुई है। नव सम्वत् के साथ ही भारत का प्रत्येक कार्यक्षेत्र चैत्र (अप्रैल) माह के प्रथम दिन से प्रारम्भ होता है। विद्यालयों में बच्चों की नई कक्षाओं का प्रारम्भ भी चैत्र माह से ही होता है। इसे वित्तीय वर्ष भी कहते हैं। लेकिन नववर्ष मनाया जाता है 1 जनवरी को? दरअसल हमारे देशवासियों की गुलामी की मानसिकता की जड़ें इतनी गहरी हो गई हैं कि उनको उखाड़ फेंकना इतना आसान नहीं। हैरानी की बात तो यह है कि गुलामी की दौर में स्वराज्य की लड़ाई के दिनों में भी सबकुछ स्वदेशी था। लेकिन स्वतंत्र भारत में अब सब कुछ विदेशी हो गया है। आर्यावर्त भारत देश का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि इस पवित्र दिन को हम 'अप्रैलफूल' अर्थात् मूर्ख दिवस बनाने का दिन बताते हैं। भारतीय संवत्सर को जो कि दुनिया का सर्वप्रथम, सर्वश्रेष्ठ एवं नैसर्गिक सम्वत्सर है, झुठलाकर 1 जनवरी विदेशी नववर्ष को हर्षोल्लास के साथ मनाने में हम ही अग्रणीय नहीं हैं बल्कि ये राजनेता भी जनता की इस बेवकूफी में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। राजनेताओं को स्पष्ट रूप से पता है कि देश की वित्तीय व्यवस्था को संचालित करने वाले वित्तीय वर्ष का प्रथम दिन 1 अप्रैल का दिन होता है फिर भी अंग्रेजियत का भूत इतना चढ़ा है कि 1 जनवरी पर ही नववर्ष की शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ बड़े-बड़े फ्लैक्स बोर्ड लगाकर देते हैं। एक माह पूर्व ही विदेशी नववर्ष की तैयारियाँ भारत में शुरू कर दी जाती हैं। करोड़ों रुपये का खर्चा इस उत्सव के लिए व्यय किया जाता है।

आज हमें स्वाधीन हुए 100 वर्ष भी नहीं हुए हैं और हम अपनी संस्कृति, सभ्यता की घोर उपेक्षा कर रहे हैं, अभी भी राजनैतिक गुलामी सिर पर सवार है। प्राचीन वैदिक संस्कृति के जवाब में विश्व के किसी भी कोने में इतनी आदर्श संस्कृति का उदाहरण मिलना अत्यन्त मुश्किल है। नया वर्ष ईसाईयों के यहाँ इसे न्यू इयर्स डे कहते हैं वहीं 1 जनवरी को होता है। भारत में स्वाधीनता से पूर्व इसका कोई महत्त्व ही नहीं था। आज तो इसके पीछे गाँव से लेकर शहर के बच्चे, बड़े, माता-बहनों के दिमागों में पागलपन सवार है और पश्चिमी सभ्यता की धूल हमारे ऊपर छाई हुई है। यह 21वीं शताब्दी है जो ईसवी संवत् के अनुसार होती है। यदि सृष्टि सम्वत् की दृष्टि से देखेंगे तो सृष्टि को बने हुए 1960853118 वर्ष हो चुके हैं और 119वाँ वर्ष प्रारम्भ हो गया है। इससे यह सिद्ध हुआ कि करोड़ों शताब्दियाँ हमने बिताई और लाखों शताब्दी आने वाली है। इतने लम्बे इतिहास को झुठलाकर संसार को केवल मात्र 20 गिनी-चुनी शताब्दी पुराना कहना अपने आपमें बहुत बड़ी भूल है और ईश्वर की व्यवस्थाओं को नकाने का प्रयास है। सृष्टि के रचयिता परमपिता परमात्मा ने वनस्पति एवं सम्पूर्ण जीव-जगत की रचना करने के उपरान्त यहाँ तक कि छहों ऋतुओं को उत्पन्न कर पृथ्वी माता को दुल्हन की तरह सजाकर तत्पश्चात् मनुष्य को उत्पन्न किया। क्योंकि ईश्वर की सारी ही कृतियों में मानव सर्वश्रेष्ठ कृति है। पृथ्वी माता के आंचल में मनुष्य ने सर्वप्रथम अपने नेत्र खोले, उस समय दिसम्बर की कड़कती ठंड नहीं बल्कि वसन्त ऋतु अपनी सुन्दरतम आभा बिखेर रही थी। समझने की बात यह है कि कोई भी इंजीनियर जब किसी इंजन या किसी मशीन का निर्माण करता है तो साथ में जानकारी के लिए एक परिचय पुस्तिका भी देता है जिसमें उसकी सम्पूर्ण जानकारी होती है। उसी प्रकार उस सर्वशक्तिमान महा इंजीनियर ने सृष्टि रूपी मशीन का निर्माण किया तब वेद रूपी ज्ञान उन प्रथम महामानवों (अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा) के अन्तःकरण में दिया। वेद सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान के भण्डार हैं। वेद ज्ञान के आधार पर हमारे प्राचीन महामनीषियों, ऋषि-मुनियों ने आदि सृष्टि से लेकर आज तक हर पदार्थ का विवरण रखा है। आदि सृष्टि से ही आर्यों में चैत्र मास की शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को ही नववर्ष दिवस के रूप में मनाने की प्रथा प्रचलित है।

सृष्टि सम्वत् के सम्बन्ध में एक और अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत है। इस देश के इतिहास को विदेशी आक्रान्ता जब नष्ट करने लगे तो आर्यों ने इतिहास सुरक्षित करने के लिए सृष्टि के गणित का इतिहास संकल्प के रूप में कंठस्थ कर लिया था जो आज भी व्यवहार में प्रचलित है जिसे नित्यप्रति किसी भी शुभ कार्य विवाह संस्कार आदि करने से पूर्व यज्ञ के समय पुरोहित अपने यजमान से संकल्प करवाते समय बुलवाता है। इस प्रकार सृष्टि के आदि से लेकर मनवन्तर युग-युगान्तर, वर्ष, माह, पक्ष, तिथि, दिन, नक्षत्र, मुहूर्त, लग्न, घड़ी, पल, विपल तक का हिसाब आज तक मौजूद है। ऋतुराज वसन्त में चैत्र शुक्लप्रतिपदा से ही हमारा प्राचीन आर्यावर्तीय सम्वत्सर प्रारम्भ हुआ। दुनिया के महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने भी इसी दिन से ही सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना करते हुए पंचांग की रचना की थी। इसी दिन ही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का राज तिलक भी हुआ था। महाराज युधिष्ठिर का भी राज तिलक इसी दिन हुआ था। इसी प्रकार अन्य अनेक ऐतिहासिक घटनाएँ इस शुभ दिन के साथ जुड़ी हैं। आज ही के दिन कलियुग के प्रथम सम्राट परिक्षित के सिंहासनारूढ़ होने का भी दिन है। आज ही के दिन समाज सुधार के युग प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी। अन्त में पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि विदेशी गुलामी के प्रतीक 1 जनवरी बनावटी नववर्ष का परित्याग करें और अपनी स्वतंत्रता, स्वाभिमान और स्वावलम्बन को ध्यान में रखकर इस अवैज्ञानिक, तर्कहीन तथ्यों पर आधारित ईस्वी सन् को छोड़कर अपने भारतीय सम्वत् विक्रम सम्वत् को ही अपनायें जो वैज्ञानिक और प्राकृतिक तथ्यों पर आधारित है। इस विषय में यही कहना चाहूँगा कि '

'दास्ता की निशानी को नई-पीढ़ी पर से उठाना है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही नववर्ष हमें मनाना है।।

इस बार 18 मार्च, 2018 को भारतीय नव सम्वत्सर का प्रारम्भ हो रहा है। इस पर्व को स्वाभिमान पूर्वक मनाते हुए एक दूसरे को बधाई देनी चाहिए तथा हर्षोल्लास के साथ वैदिक यज्ञ करके इस दिन का शुभारम्भ करना चाहिए।

– 'चरित्र निर्माण मण्डल', ग्राम-शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली

हे दिव्य सूर्यसम आर्य समाज

–प्रियवीर हेमाइना

हे आर्य समाज! आर्य समाज!
हे दिव्य सूर्यसम आर्य समाज!
हे वैदिक संस्कृति के साज।
तूने किये महान् ही काज।।1।।
तेरे सिद्धान्तों से थर्राते।
टोनेबाज व धोखेबाज।
मैं इसीलिए तो कहता हूँ,
तू ही है समाज अधिराज।।2।।
तू है रक्षक कन्याओं का,
तू है रक्षक अबलाओं का।
कन्याओं हेतु आर्य समाज,
देश में किया शिक्षा का राज।।3।।
हिन्दी भाषा को तूने ही,
संज्ञा दी आर्यभाषा की।
है प्रतिष्ठित जो देश में आज,
पहने राष्ट्रभाषा का ताज।।4।।
तूने दिये हिन्दी के वक्ता,
प्रकाशवीर जैसे प्रवक्ता।
भाषण की अनुपम आवाज,
कहाँ सुनेंगे सर्वजन आज।।5।।
"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का,
काज है तेरा महा सुकाज।
इसी से तो होगा पुनः यहाँ,
चक्रवर्ती आर्यों का राज।।6।।
हो यहाँ सात्विकता का राज,
पुनः पायें कृष्ण योगीराज।
हो सुखमय यह लोकराज,
कर रहा प्रयत्न आर्य समाज।।7।।

– 318, विपिन गार्डन, नई दिल्ली-59

आर्य समाज स्थापना दिवस पर आओ संकल्प लें!

मैं ज्ञानेन्द्र स्वरूप भटनागर सुपुत्र श्री सुन्दर स्वरूप भटनागर, शकरपुर, दिल्ली। देश के सभी नागरिकों विशेषकर युवाओं और बच्चों से यह विनम्र अपील करना चाहता हूँ कि हम सभी की भावनाएँ पवित्र हों, मन निश्चल तथा निष्कपट हो, योगमय एवं ध्यानयुक्त मधुर, शांतिपूर्ण जीवन हो। प्रत्येक नागरिक आर्य समाज स्थापना दिवस पर यह संकल्प ले कि हम हृदय से पूरे प्रयास और लगन से इस देश एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं समस्त बुराईयों पर विजयश्री प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहेंगे तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों और मन्तव्यों को जन-जन तक पहुँचायेंगे। इसके अतिरिक्त देश के विकास में अपना सहयोग एवं समर्थन देते रहेंगे। अपने रक्त की अन्तिम बूंद तक तथा अन्तिम श्वाँस तक निरन्तर अविरल तथा पवित्र भावना से इस देश तथा आर्य समाज को उन्नति पथ पर अग्रसर करने तथा एक अच्छे सुदृढ़ एवं विकासशील भविष्य की कल्पना को साकार करने के लिए पवित्र हृदय एवं अपनी शुद्ध आत्मबल से सदैव प्रयासरत रहेंगे। आपका अपना।

– ज्ञानेन्द्र स्वरूप भटनागर

सार्वदेशिक सभा के पूर्व कर्मचारी श्री पूर्णचन्द्र जी का आकस्मिक निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कर्मचारी श्री पूर्णचन्द्र जी का 5 मार्च, 2018 को अपने निवास स्थान – ग्राम व पो.-जमानाबाद, जिला-कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश में हृदयगति रुक जाने के कारण अकस्मात निधन हो गया। वे लगभग 67 वर्ष के थे। वे अपने पीछे अपनी पत्नी तथा चार बच्चों को छोड़ गये। श्री पूर्णचन्द्र जी अत्यन्त परिश्रमी, मिलनसार तथा सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे। सार्वदेशिक सभा में उन्होंने लगभग 35 वर्ष तक अपनी सेवाएँ दी थी। पिछले कुछ वर्षों से वे अपने गाँव में ही रह रहे थे। उनके निधन के समाचार को सुनकर सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारी तथा कर्मचारी शोक निमग्न होकर उनके संस्मरणों को साझा करने लगे। सार्वदेशिक सभा परिवार दिवंगत की सद्गति तथा पारिवारिक जनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है।

अभिनन्दन एवम् छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सम्पन्न

मानव सेवा प्रतिष्ठान एक सामाजिक सस्था है जो पिछले 20 वर्षो से अपने उदेश्यों को लेकर आप सभी के सहयोग से कार्यरत है। 29 अक्तूबर, 2017 मे गुरुकुल भैय्यापुर लाढोत रोहतक हरयाणा मे नोर्थ अमेरिकन जाट चौरिटि व मानव सेवा प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्वावधान में लगभग 250 छात्र छात्राओं को छात्रवृति एवं 13 विद्वान विदुषियों सन्यासियों सामाजिक कार्यकर्ताओं को सम्मानित करके 20 लाख रूपये प्रदान किये। इस कार्यक्रम में आर्य जगत के वरिष्ठ सन्यासियों नेताओं विद्वानों ने अपना आशीर्वाद दिया। अमेरिका हॉलैंड आदि देशों से भी सहयोगियों ने आकर सहयोग व आशीर्वाद दिया। मानव सेवा प्रतिष्ठान ने द्वितीय चरण में 25 फरवरी, 2018 को वैदिक कन्या गुरुकुल एचराकला जीन्द हरयाणा मे अनेक गुरुकुलो के 55 छात्र छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करने के साथ प्राध्यापिका मीरा आर्या वैदिक कन्या गुरुकुल एचराकला को स्व. चौ. जयभगवान जागलान अमेरिका द्वारा स्थापित अपनी बहन स्व श्रीमती लक्ष्मी देवी नौल्था पानीपत हरियाणा निवासी कि स्मृति में स्थापित सम्मान सम्मानित करते हुए 3 लाख रूपये वितरित किए गये। वैदिक कन्या गुरुकुल एचराकला आर्य गुरुकुल पाढा करनाल गुरुकुल मोर माजरा आर्य आदर्श महाविद्यालय मतलोडा पानीपत व गुरुकुल गोतम नगर दिल्ली के छात्र मुख्य रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती राजबाला जागलान अमेरिका ने अपने कर कमलों से सभी छात्रों को सहायता राशि प्रदान करने के साथ मीरा आर्या को शाल स्मृति चिन्ह व अभिनन्दन पत्र तथा सम्मान राशि को प्रदान किया। मानव सेवा के प्रधान चन्द्र देव शास्त्री अपनी सम्पूर्ण कार्यकारिणी के साथ उपस्थित रहते हुवे कार्यक्रम को सफल बनाने में व्यस्त रहे। चौधरी महेन्द्र सिंह चहल गोहाना चौधरी लखमीचंद नरवाल हरवीर सिंह जागलान मोहित जागलान पानीपत आदि ने अपनी उपस्थिति एवम् उद्बोधन कर कार्यक्रम को सफल बनाया। डा अमरकोर आर्या कन्या गुरुकुल पाढा करनाल प्रिंसिपल सुनिता चौधरी वैदिक कन्या गुरुकुल एचरा कला ने अपने प्रभाव शाली शैली व्यक्त किए विचारों से प्रभावित किया। सस्था से उषा आर्या कमलेश देवी राजदुलारी आदि ने श्रीमती राजबाला जागलान का फूल मालाओं एवम् शाल स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि श्रीमती राजबाला जागलान अमेरिका निवासी ने अपने उदबोधन मे कन्याओं द्वारा किये गए सास्कृतिक कार्यक्रमों की प्रशंसा करते हुए अपना आशीर्वाद दिया। मानव सेवा प्रतिष्ठान कि ओर से सोमदेव शास्त्री हरवीर सिंह शास्त्री एवम् कन्या गुरुकुल पाढा कि कार्यकारिणी व गुरुकुल एचराकला कि ओर से सभी को सम्मानित किया गया।

नई कार्यकारिणी के गठन के साथ सम्पन्न हुई आर्य लेखक परिषद् की बैठक

आर्य लेखक परिषद् की साधारण बैठक आर्य समाज भोगल (जंगपुरा) नई दिल्ली के सभागार में आयोजित की गई। बैठक में जहां गत कार्यवाही की सम्पुष्टि की गई वहीं पर परिषद् की आगामी गतिविधियों के बारे में विस्तार से चर्चा हुई। इसी के साथ आय–व्यय का विवरण आचार्य वेदप्रिय शास्त्री ने प्रस्तुत किया जिसका अनुमोदन बैठक में मौजूद आर्य लेखकों और सदस्यों ने सर्वसम्मति से किया। इसी क्रम में आर्य लेखक परिषद की पत्रिका, आर्य समाज प्रहरी का डिजिटल संस्करण शुरू करने की सहमति बनी। नए संरक्षक मंडल, नए सम्पोषक मंडल और नई कार्यकारिणी गठन पर चर्चा हुई। सभी लेखकों और विद्वानों का विचार था कि आर्य लेखक परिषद को नए सिरे से बहुत ही सूझबूझ के साथ इसकी गतिविधियों को आगे बढ़ाने की जरूरत है। आज जब कि समाज, देश–दुनिया में तमाम तरह की समस्याएं लगातार बढ़ती जा रही हैं ऐसे में आर्य लेखक परिषद् का दायित्व और भी बढ़ जाता है। लेखकों और आर्य विद्वानों को वैदिक धर्म की खासियत को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने के लिए अपना ज्यादा से ज्यादा वक्त समाज सुधार के लेखन की तरफ भी लगाना चाहिए। बैठक के अंतिम बिंदु में आर्य लेखक परिषद् की कार्यकारिणी का संशोधन किया गया और फिर से पदाधिकारियों और कार्यकारिणी सदस्यों का चयन किया गया। जिसमें संरक्षक के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार पद्मश्री डा. श्याम सिंह शशि, साहित्यकार, डॉ. भवानीलाल भारतीय (जोधपुर) विद्वान व लेखक आचार्य वेदप्रिय शास्त्री, अध्यक्ष (बारांराज) रामस्वरूप रक्षक (अजमेर) उपाध्यक्ष, साहित्यकार और समाजसेवी अखिलेश आर्येन्दु (दिल्ली) मंत्री, उपमंत्री के पद पर क्रमशः साहित्यकार डा. हरीसिंह पाल और आर्य विद्वान लेखक सतीश आर्य व कोषाध्यक्ष के रूप में श्री हनुमान प्रसाद (कोटा) का चयन किया गया। इसके अलावा ब्र. राजेन्द्र आर्य (शक्तिनगर, उ.प्र.) संजय सत्यार्थी (बिहार) डा.वेद प्रकाश विद्यार्थी (दिल्ली) डा. वेदपाल (बड़ौत मेरठ) डॉ. चन्द्रशेखर लोखंडे (लातूर, महाराष्ट्र) एवं श्री धर्म पाल आर्य (दिल्ली) के नाम पर सहमति हुई।

– अखिलेश आर्येन्दु,
प्रवक्ता और मंत्री, आर्य लेखक परिषद्, नई दिल्ली

।। ओ३म् ।।

जहाँ नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

प्रण करते हैं संस्कृति की शाम नहीं होने देंगे, वीर शहीदों की समाधी बदनाम नहीं होने देंगे।
जब तक तन में एक बूंद भी लहू की बाकी है, भारत की आजादी को गुमनाम नहीं होने देंगे।

शहीदों की अमानत है – भारत की आजादी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में
अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 87 वें बलिदान दिवस पर

एक शाम शहीदों के नाम: भव्य संगीत संध्या

शुक्रवार, 23 मार्च 2018, सायं: 4:30 से 8:00 बजे तक

स्थान: आर्य समाज सुभाष नगर, ब्लॉक–9, पश्चिमी दिल्ली–110027

यज्ञ ब्रह्मा: आचार्य महेन्द्र भाई, वेद पाठ: पं. अमितांशु शास्त्री

गायक कलाकार: नरेन्द्र आर्य "सुमन"* अंकित उपाध्याय

मुख्य अतिथि : **श्री अजय माकन** (प्रदेश अध्यक्ष, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी)

विशिष्ट अतिथि : श्री करण सिंह तंवर (पूर्व विधायक), श्री सुरेन्द्र सेतिया (निगम पार्षद), श्री सुभाष आर्य (पूर्व महापौर दक्षिण दिल्ली)

अध्यक्षता : श्री रवि चड्डा (प्रधान, पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल)

गरिमामय उपस्थिति: श्री जगदीप सिंह (विधायक), रमेश कुमारी भारद्वाज, राजकुमारी ढिल्लो, यशपाल आर्य (पूर्व पार्षद), जगदीश आर्य, ओम सपरा (मेट्रोपोलटेन मजिस्ट्रेट) नरेश अग्रवाल, भरत मेहता, संजय चंडोक, राकेश चंडोक, हिमांशु पाहूजा, अजय चौधरी, गगन साहनी, रत्नाकर बत्रा, एस.एन. डंग, प्रकाशचन्द आर्य, अशोक आर्य, राजपाल पुलियानी, बलदेव राज आर्य, वेद प्रकाश, सुनीता पासी, पुष्पलता वर्मा, अमरसिंह सहरावत, अमरनाथ बत्रा, ओमप्रकाश अग्रवाल, महेन्द्र बूटी, चन्द्रमोहन खन्ना, उपेन्द्रनाथ तलवार, जगदीश गुलाटी, सत्यानन्द आर्य, सुरेन्द्र कोछड़, कस्तूरीलाल मक्कड़, ईशकुमार मक्कड़, डॉ. सुन्दरलाल कथुरिया, रामकृष्ण सतीजा, अजय तनेजा, वेदपाल आर्य, जगवीर सिंह आर्य, डॉ. मुकेश सुधीर, जीवनप्रकाश शास्त्री, शान्ता तनेजा, अर्जुनदास बत्रा, जगदीश मलिक, रघुनाथसिंह यादव, मानवेन्द्र शास्त्री, बलदेव सचदेवा, अशोक कथूरिया, श्रीपाल आर्य, लक्ष्मणदेव छाबड़ा, भारतभूषण धूपड़, नरेश विज, सुरेन्द्र बुद्धिराजा, विश्वनाथ आर्य, सुरेन्द्र मानकटाला, सुनीता बुग्गा, उर्मिला आर्या, संतोष वधवा, धर्मपाल परमार, नरेन्द्र कस्तूरिया, अंजु जावा, अमित मान, सुभाष मित्तल, विनेश आहुजा, अनु चौहान, भगतसिंह राठी, प्रेमकान्त बत्रा, महेश भयाना, डॉ. विनोद खेत्रपाल, पं. सुरेश झा, अखिलेश शर्मा, सुरेश टंडन, विजय कपूर, आतिथ्य आहूजा, सुषमा अरोड़ा, अंजु चौधरी, निर्मल मदान, कृष्णा भाटिया, मधु बिवानी, नीरू बुआ, पूजा ढींगरा, सुलेखा, सीमा आर्य, कृष्णा भाटिया, ज्योति कपूर, रेखा कपूर, संतोष शास्त्री, मायाराम शास्त्री, विनेश आर्य, ओमवीर सिंह गौरव झा, राकेश आर्य, वरुण आर्य, माधव सिंह, शिवम मिश्रा

देश के अमर शहीदों को श्रद्धाजंली अर्पित करने सपरिवार पंहुचे

ऋषि लंगर: रात्रि 8 से 9 बजे तक

-: निवेदक :-

डॉ. अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	यशोवीर आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	रामकुमार सिंह प्रान्तीय संचालक	पुनीत विज प्रधान समाज	राजेन्द्र लाम्बा मंडल महामन्त्री	संजीव आर्य संयोजक
कृष्णचन्द पाहूजा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	देवेन्द्र भगत प्रेस सचिव	दुर्गेश आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	सिकंदर अरोड़ा मंत्री समाज	पवन अरोड़ा	मनोज ढींगरा उपप्रधान आर्य समाज, सुभाष नगर
धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	सुरेश आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	सुशील आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	ओम प्रकाश नागपाल कोषाध्यक्ष समाज	अरुण आर्य प्रांतीय महामंत्री	सौरभ गुप्ता प्रधान शिक्षक

कार्यालय: आर्य समाज, कबीर बस्ती, दिल्ली–110007, फोन: 9810117464, 8860624559

प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. नन्दलाल निर्भय को पुत्र शोक

18 फरवरी, 2018 को सम्पन्न हुई श्रद्धांजलि सभा में दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि

आर्य जगत् के प्रख्यात वैदिक विद्वान् सिद्धहस्त लेखक, ओजस्वी कवि पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य ग्राम–बहीन (पलवल), हरियाणा के ज्येष्ठ पुत्र श्री ब्रह्मदेव आर्य का गत दिनों हृदयगति रूक जाने से पार्क अस्पताल फरीदाबाद में निधन हो गया। उनकी स्मृति में दिनांक 18 फरवरी, 2018 को शांति यज्ञ आचार्य नेत्रराम शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के उपरान्त श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि सभा में श्री उदयभान विधायक होडल, हरियाणा ने कहा कि पं. नन्दलाल निर्भय जैसे ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, देशभक्त हैं, ऐसे ही श्री ब्रह्मदेव शर्मा थे। ब्रह्मदेव शर्मा जी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम सब उनके गुणों का अनुकरण करें। श्री बालकिशन आर्य वेद प्रचारक ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भेजा गया शोक पत्र एवं सांत्वना संदेश पढ़कर सुनाया। हरियाणा के प्रसिद्ध अधिवक्ता चौ. राजेन्द्र सिंह पलवल ने दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा पं. नन्दलाल निर्भय के परिवार को इस आघात को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की। इस अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री नेत्रराम शास्त्री ने कहा कि आत्मा अमर है तथा शरीर नश्वर है। मानव तन सबसे कीमती है। इसलिए हमें इसका महत्त्व समझते हुए सदैव शुभ कर्म करने चाहिए। इस अवसर पर श्री भगत सिंह आर्य–मथुरा, श्री श्याम सुन्दर शर्मा–खाम्बी, पलवल, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री तुलसीराम आर्य, श्री धर्मदेव आर्य–दिल्ली, श्री खजान सिंह शर्मा–बहीन, श्रीमती सावित्री देवी, श्रीमती अंगूरी देवी, श्रीमती ब्रह्मा देवी, श्रीमती शकुन्तला देवी, श्रीमती प्रभा देवी आर्या, श्रीमती दुर्गावती आर्या, श्री जयदेव आर्य, श्री सुभाषचन्द्र आर्य, श्री उत्तम प्रकाश आर्य तथा मान्यता देवी उपस्थिति थीं। शांति पाठ के पश्चात् श्रद्धांजलि सभा का समापन हुआ।

– जगदीश चन्द्र आर्य, महामंत्री वैदिक धर्म सेवा समिति, बहीन, पलवल, हरियाणा

'वैदिक सार्वदेशिक' पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशन का स्थान	: दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड, (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-02
प्रकाशन की अवधि	: साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	: प्रति बृहस्पतिवार
मुद्रक का नाम	: प्रो. विट्ठलराव आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
मुद्रक का पता	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
सम्पादक का नाम	: प्रो. विट्ठलराव आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
सम्पादक का पता	: पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम-पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1 प्रतिशत से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002

मैं प्रो. विट्ठलराव आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण, जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रति

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 194वाँ महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव सोल्लास सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों पर चलने की आवश्यकता–सांसद मीनाक्षी लेखी

रविवार 11 फरवरी 2018,आज केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली के तत्वावधान में आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती का 194 वाँ जन्मोत्सव 14,महादेव रोड़ नई दिल्ली में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य यशपाल शास्त्री ने यज्ञ करवा कर किया।

मुख्य अतिथि सांसद मीनाक्षी लेखी ने महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों पर चलने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा व सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करना होगा। आर्य समाज के लोगों को समाज के बीच जाकर पाखण्ड अंधविश्वास के विरुद्ध जनजागरण करना है। उन्होने कहा की शिक्षा क्षेत्र में भी आज सुधार की जरूरत है जिससे युवा पीढ़ी देश भक्त तैयार हो।

पूर्व महापौर सुभाष आर्य ने आर्य समाज को आंदोलन बनाने का आह्वान किया उन्होंने कहा कि राष्ट्र की समस्याओं का हल महर्षि दयानंद के आदर्शों पर चलने पर ही होगा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अनिल आर्य ने कहा कि राष्ट्र में विघटनकारी शक्तियाँ सर उठा रही है युवाओं में संस्कार व देश की भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा पैदा करना समय की आवश्यकता है, ऋषि दयानन्द ने सबसे पहले स्वाधीनता का संदेश दिया जिससे प्रेरणा लेकर हजारों युवा आजादी के आंदोलन में कूद पड़े। समारोह की अध्यक्षता आर्य नेता दर्शन अग्निहोत्री ने की। वैदिक विद्वान आचार्य वीरेंद्र विक्रम, आचार्य योगेंद्र शास्त्री, बहन वैशाली, पुष्पा चुघ, आचार्य महेन्द्र भाई ने भी अपने विचार रखे।

इस अवसर पर अनिल शर्मा, भारत मदान, ओम सपरा, यशपाल आर्य, सौरभ गुप्ता, अंजू मेहरोत्रा, रमेश गाड़ी, उर्मिला आर्य, चन्दर भान अरोड़ा, देवेन्द्र भगत आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

– अनिल आर्य,संयोजक : 9868051444, 9810117464

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 4100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में
18 मार्च, 2018 तक अग्रिम धनराशि जमा कराने पर केवल 2800/- रुपये में प्राप्त कर सकेंगे।

4100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

दूरभाष :- 011-23274771, 23260985 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।